प्रेस विज्ञप्ति

भापअ केंद्र के प्रशिक्षण विद्यालय का दीक्षांत समारोह

राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम सुदृढ़ करने के लिए, इंजीनियरी में स्नातकों एवं विज्ञान में स्नातकोत्तर हेतु ओरियंटेशन पाठ्यक्रम (ओसीईएस) के 127 वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों तथा डीएई ग्रैजुएट फैलोशिप हेतु ओरियंटेशन पाठ्यक्रम (ओसीडीएफ) के 15 सदस्यों के बैच ने विस्तृत ओरियंटेशन पाठ्यक्रम पूरा करने के पश्चात देश के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की मुख्य धारा में प्रवेश किया। भापअ केंद्र के प्रशिक्षण विद्यालय का 51 वां दीक्षांत समारोह दिनांक 25 अगस्त 2008 को अपराह्न 2.30 बजे सेंट्रल कांप्लेक्स सभागृह, भापअ केंद्र, ट्रांबे, मुंबई में आयोजित किया गया।

डॉ. आर.के. पचौरी, अध्यक्ष, मौसम परिवर्तन एवं महा निदेशक, अंतरसरकारी पैनल, ऊर्जा एवं संसाधन संस्था इस समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने संबंधित विषयों के उत्कृष्ट छात्रों को होमी भाभा पुरस्कार प्रदान किया। उन्होंने उपस्थित विद्यार्थी समूह को संबोधित करते हुए कहा कि भापअ केंद्र ने देश एवं मानवता के हित में इतना कुछ किया है कि इससे उज्ज्वल कैरियर हेतु बुनियाद उपलब्ध होगी। उन्होंने यह भी कहा कि, “ ज्ञान में पाण्डित्य के साथ-साथ नम्रता भी होनी चाहिये क्योंकि ज्ञान का स्वभाव ही कुछ ऐसा है कि इसका अर्जन केवल वही व्यक्ति कर सकता है जो नम्र होता है। जिस क्षण से आप विश्वास करने लागते हैं कि आप उच्च स्तरीय ज्ञान अर्जित कर चुके हैं, आपकी सीख रुक जाती है”। “क्लाइमेट चेंज एण्ड दि रोल ऑफ न्यूक्लियर एनर्जी”, पर अपनी वार्ता में उन्होंने मौसम प्रणाली के तापन के बारे में चेतावनी दी। विश्व का तापमान बढ़ रहा है जिससे समुद्र के स्तर एवं उत्तरी गोलार्ध में बर्फीले क्षेत्र प्रभावित हो रहे हैं। इसके परिणाम होंगे मेघ-स्फोट की बारंबारता में वृद्धि, कृषि उत्पादकता में कमी, ताजे जल पर संघात एवं तनावग्रस्त बुद्धि। इसे दूर करने की आवश्यकता है। अंतत: उनकी यही राय थी कि हमें नाभिकीय ऊर्जा को भी अवसर देना होगा, यदि ऐसा नहीं करते हैं तो यह अवसर नष्ट हो जायेगा।

डॉ. अनिल काकोडकर, अध्यक्ष, पऊआ ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में स्नातक अधिकारियों से कहा कि वैश्विक स्तर पर लोग हमारी देशी निवेश से अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करते हुए स्वयं अपने नाभिकीय विद्युत रिएक्टरों की डिजाइन एवं निर्माण करने की क्षमता को पहचानते हैं। हम उन इक्के-दुक्के देशों में से हैं जो तीव्र रिएक्टर प्रौद्योगिकी के मामले में सक्षम हैं एवं विश्व में हम थोरियम के मामले में एकमात्र हैं जो यूरेनियम की तुलना में बृहत ऊर्जा स्रोत है। हाइड्रोजन, जल, कृषि जैसी नाभिकीय ऊर्जा के अनेक अन्य आयामों में हमने महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की है।

डॉ. एस. बॅनर्जी, निदेशक, भापअ केंद्र ने कहा कि प्रशिक्षण विद्यालय एकमात्र शैक्षणिक अकादमी है एवं एक वर्ष के प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान उनके संपूर्ण कैरियर बनाने में उपयोगी है। उन्होंने यह भी कहा कि प्रशिक्षण का प्रयोजन है पूरे विभाग के कार्यक्रमों को जानना और अपने विषय के क्षेत्र के मूल सिद्धांत में सुविज्ञता हासिल करना, जिससे हम दर्जी की सूई की तरह होंगे लेकिन एक विषय में सुविज्ञ होंगे।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए डॉ. आर.बी. ग्रोवर, निदेशक, ज्ञान प्रबंधन वर्ग ने कहा कि प्रशिक्षण विद्यालय की स्थापना मानवशक्ति की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिये की गई थी। अब होमी भाभा राष्ट्रीय संस्था (एचबीएनआई), मानित विश्वविद्यालय की स्थापना से वैज्ञानिक अधिकारी अपनी शैक्षणिक योग्यता को बढ़ा सकेंगे एवं अनुसंधान और प्रौद्योगिकी की उत्पादकता (आउटपुट) को भी बढ़ा सकते हैं।

डॉ. आर.आर. पुरी, अध्यक्ष, मानव संसाधन विकास प्रभाग ने कहा कि यह नया बैच आर्थिक उन्नति एवं देश की सुरक्षा के लिये नाभिकीय ऊर्जा के सभी पहलुओं का प्रयोग करने के पऊवि के अधिदेश को क्रियान्वित करने का प्रयास करेगा।

डॉ. विजय कुमार, सह निदेशक, ज्ञान प्रबंधन वर्ग ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में परमाणु ऊर्जा विभाग परिवार के अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ वैज्ञानिकों और इंजीनियरों ने भी बढ़ - चढ़कर भाग लिया।